मण्डी साक्षरता समिति
वार्षिक प्रगति रिपोर्ट 1992 से 2006 तक

मंडी साक्षरता समिति का गठन व उसकी पृष्ठभूमि

मंडी जिला में साक्षरता अभियान की शुरूआत के लिए प्रयास हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा चलाए गए अभियान से पहले हो चुके थे। बहुचर्चित भोपाल गैस कांड ने जब सारे देश को हिला कर रख दिया था, तब राष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिकों, बुद्धिजीवियों, लेखकों व कलाकारों को मंच पर इकट्ठा करने की जरूरत महसूस हुई। वर्ष 1987 में 26संगठनों ने अपने आपको अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क के रूप में संगठित किया ताकि लोगों को वैज्ञानिक तौर तरीकों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रति बेहतर समझ विकसित की जा सके तथा समाज के विकास में उनके योगदान के प्रति अवगत करवाया जा सके। समाज में इस सोच को विकसित करने के लिए वातावरण निर्माण की जरूरत थी जो कला जत्थे कार्यक्रम ने पूरी की। पूरे देश में पांच क्षेत्रीय कला जत्थों को प्रशिक्षित किया गया तथा उनके द्वारा 25हजार कि.मी. की दूरी तय कर 500 से ज्यादा स्थानों पर कार्यक्रम दिखाये गये।

यह कार्यक्रम यूं तो प्रदेश के अन्य हिस्सों में भी दिखाए गए। परंतु मंडी के लिए ये कार्यक्रम खास इसलिए थे क्योंकि मंडी के एक साथी कुलदीप गुलेरिया इसमें शामिल थे। जिला में कुछ जागरूक नवयुवकों में कुछ कर गुजरने का जुनून सा सवार हो गया। उनमें नव चेतना का संचार हुआ। ऐसा महसूस किया गया कि इन कला जत्थों का प्रभाव शहर तक ही सीमित रहा क्योंकि ये कार्यक्रम शहरों तक सीमित रहे जबकि गांवों में इन कार्यक्रमों की अधिक जरूरत थीं तब यह सोच राज्य स्तर पर उभर कर आई कि वैज्ञानिक चेतना को गांवों तक ले जाने से पहले साक्षरता अभियान की जरूरत है। यही एक ऐसा माध्यम होगा जिसके जरिये देश के पिछड़े, दबे कुचले व शोषित आदमी तक पहुंचा जा सकता है। इस अभियान की लोकप्रियता के लिए राष्ट्रीय साक्षरता मिशन को केरल के अर्नाकुलम जिले में चले साक्षरता अभियान आदर्श मॉडल के रूप में मिला। इसके लिए भी

जन विज्ञान जत्था चलाने की जरूरत थी ताकि वातावरण निर्माण किया जा सके। राष्ट्रीय स्तर पर डा. मालकोम आदिशेषैयया की अध्यक्षता में भारत ज्ञान विज्ञान समिति का गठन किया गया। डा. एम.पी. परमेश्वरन इसके सचिव बनाए गए।

वर्ष 1990 को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष के रूप में मनाया गया। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से आत्म निर्भरता व राष्ट्रीय एकता के लिए विज्ञान और साक्षरता का नारा देकर देश के लगभग 6लाख गांवों में साठ हजार केन्द्रों में भारत ज्ञान विज्ञान जत्थे आयोजित करने का आहवान किया। मंडी जिला भी इससे अछूता नहीं रहा। साक्षरता दूत के रूप में राजेन्द्र मोहन और भूपेन्द्र सिंह ने कला जत्थे की अगुवायी की। 25जून,1990 को जिला स्तरीय सम्मेलन में ही एक कला जत्थे का गठन हुआ जो थोड़े से प्रशिक्षण के बाद गांव गांव में साक्षरता की मशाल जलाने चल पड़ा। उसी जत्थे ने लोगों में साक्षरता के विषय को चर्चा का मुद्दा बनाया। जत्थे द्वारा तैयार नाटक कथा रामदीन के मुख्य पात्र रामदीन में गांव वालों को अपना अक्स नजर आया। तत्तकालीन उपायुक्त डा. अशोक रंजन बसु की अध्यक्षता में भारत ज्ञान विज्ञान समिति की मंडी इकाई का गठन किया गया। मंडी में यहीं से साक्षरता अभियान का सूत्रपात हुआ।

साक्षरता की लौ का प्रज्ज्वलन

मंडी जिले में साक्षरता अभियान के लिए जमीन पहले से तैयार हो चुकी थी। भारत ज्ञान विज्ञान समिति की मंडी इकाई पहले से मौजूद थी। परंतु हिन्दी के वरिष्ठ लेखक व सेवानिवृत प्राचार्य प्रो. सुंदर लोहिया ने इस अभियान में जुड़ने की सहमति मिलने से साक्षरता के कार्य व जागरूक नवयुवकों को अधिक बल मिला। प्रो. लोहिया हालांकि सेवानिवृति के पश्चात पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन से अपने को जोड़ कर लोगों में वैज्ञानिक चेतना का प्रसार करने का मन बना रहे थे परंतु जिले के जनूनी नौजवानों का साक्षरता के प्रति रूझान व उनकी साक्षरता अभियान से जुड़ने की अपील को भी वे ठुकरा न सके। बहस दर बहस के बाद उनकी सहमति मिल पाई। प्रो. लोहिया की सहमति मिलते ही जिले में साक्षरता अभियान चलाने के लिसे विचार विमर्श शुरू हो गया।

यह वह समय था जब साक्षरता कर्मियों के पास न तो अपना दफतर था न ही बैठने की कोई ऐसी जगह, जहां पर बैठकर इस अभियान की कार्य योजना बनाई जा सके। ऐसी विकट परिस्थिति में साहित्यकारों की मिलन स्थली की दुकान "अलंकार" काम आयी। जहां बैठकर इस विषय पर बातचीत की जाती थी। दूसरी तरफ साक्षरता अभियान की मूल भावना को जिला प्रशासन को समझने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

क्योंकि तत्कालीन उपायुक्त श्री अजय मितल इस बात से सहमत नहीं थे कि एक साथ पूरे जिले में साक्षरता अभियान चल सकता है। उनका तर्क था कि पहले एक पंचायत को साक्षर करके दिखाओं, तब मेरे पास आना। जबकि अभियान की प्रकृति के अनुसार जिला स्तर पर साक्षरता का काम शुरू होना था साथ ही उपायुक्त का इस समिति का अध्यक्ष बनना भी जरूरी था।

मंडी साक्षरता समिति का गठन

हालांकि तत्कालीन भाजपा सरकार ने पूरे प्रदेश के लिए संपूर्ण साक्षरता अभियान की परियोजना राष्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा स्वीकृत करवा ली थी। प्रदेश में इसकी शुरूआत 14जून,1992 को हिमाचल विश्व विद्यालय के सभागार में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री आर. वेकटरमन द्वारा साक्षरता ज्योति प्रज्जवलित की गई। परंतु जिला मंडी में 5फरवरी,1992 को विधिवत ढंग से मंडी साक्षरता समिति का गठन सोसायटी एक्ट 1860 के तहत कर दिया गया था। तत्कालीन अतिरिक्त उपायुक्त श्री जी.एस.राठौर समिति के अध्यक्ष बने और प्रो. सुंदर लोहिया सचिव बनाए गए।

फरवरी माह में ही मंडी जिला के लिए अलग से साक्षरता परियोजना तैयार की गई। आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद जन सहयोग व इधर उधर से पैसा इकठ्ठा करके निरक्षरता के खिलाफ पढ़े– लिखे लोगों को एकजुट करने का प्रयास शुरू हो चुका था।

2से 8मार्च,1992 में शिवरात्रि मेले के दौरान साक्षरता के प्रचार व इसके लिए माहौल बनाने तथा जन भागीदारी के लिए साक्षरता प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में आए जिला के दूर दराज के गांव के लोगों ने अपनी भागीदारी निभाने का वायदा भी किया।

लोगों के उत्साह को देखकर मंडी साक्षरता समिति द्वारा पहले चरण में सदर, सुंदरनगर तथा रिवालसर में अभियान चलाने का निर्णय लिया गया।

दूसरे चरण में बाकि के सात खडों में अभियान चलाया गया। चरणबद्ध तरीके से अभियान चलाने का उद्देश्य यह था कि प्रथम चरण के अनुभवों का दूसरे चरण में लाभ उठाया जा सके तथा जो खामियां रहेगी उन्हें दोहराया न जा सके। समिति के गठन के चार माह बाद जब पूरे राज्य में

साक्षरता ज्योति को रवाना किया गया तब जून माह में ज्योति के मंडी पहुंचने पर विशाल जलूस निकाला गया।

अभियान के लिये चयनित कार्य

- ❖ कार्यकर्ताओं की पहचान।
- ❖ वातावरण निर्माण।
- ❖ संगठन।
- ❖ सर्वेक्षण कार्य।
- ❖ वास्तविक पढ़ाई–लिखाई कार्य।

कार्यकर्ताओं की पहचान

शिवरात्रि मेले के दौरान साक्षरता प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें एक रजिस्टर रखा गया जिसमें रूचि रखने वाले कार्यकर्ता अपना नाम व पता लिख सकते थे। इस कार्यवाही से मेले में आए दूर दूर गांव के लोगों ने भी स्थानीय तौर पर साक्षरता अभियान के काम करने की सहमति प्रदान की। दूसरे साक्षरता अभियान से पूर्व तैयारी के लिए हुई विभिन्न कार्यशालाएं चाहे वे मंडी में हुई या राज्य स्तर पर हुई उनमें कार्यकर्ताओं को चिहिन्त किया गया। तीसरे विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न विभागों के अधिकारियों,महिला मंडल, युवकमंडल अन्य स्वयं सेवी संगठनों के कार्यकर्ताओं को इस अभियान के लिए चिहिन्त किया गया।

वातावरण निर्माण

वातावरण निर्माण के लिए बैनर, स्टीकर, पोस्टर तथा बैज इत्यादि तैयार करवाए गए। साथ ही कला जत्थे द्वारा गांव गांव में साक्षरता का संदेश पहुंचाया गया।

साक्षरता अभियान के लिए आयोजित कार्यशालाओं का विवरण

क्र0	दिनांक	विषय	स्तर	उद्देश्य
1	16मई,1992	संपूर्ण साक्षरता अभियान	जिला	मुख्य स्रौत व्यक्ति के चयन हेतु
2	28–30जुलाई,1992	संपूर्ण साक्षरता अभियान	जिला	मुख्य स्रौत व्यक्ति के चयन हेतु
3	8–10अगस्त,1992	नाटक लेखन कार्यशाला	जिला	कलाकारों से संबंधित
4	16–23अगस्त,1992	कला जत्था कार्यशाला	जिला	कलाकारों से संबंधित
5	10–19सितंबर,1992	कला जत्था कार्यशाला	जिला	कलाकारों से संबंधित
6	सितंबर,1992	कला जत्था कार्यशाला	खंड	कलाकारों से संबंधित
7	अक्तूबर,2002	संपूर्ण साक्षरता अभियान	खंड	मुख्य प्रशिक्षक
8	नवम्बर,1992	संपूर्ण साक्षरता अभियान	पंचायत	अक्षर सैनिक
9	नवम्बर,1993	संपूर्ण साक्षरता अभियान	क्षेत्र	मुख्य स्रौत व्यक्तिकलाकार
10	नवम्बर,1993	संपूर्ण साक्षरता अभियान	क्षेत्र	मुख्य स्रौत व्यक्तिकलाकार
11	नवम्बर,1993	महिला कला जत्था कार्यशाला	क्षेत्र	मुख्य स्रौत व्यक्तिकलाकार
12	नवम्बर,1996	संपूर्ण साक्षरता अभियान	खंड	प्रशिक्षण कार्यशाला

जिले से बाहर की कार्यशालाओं में भागीदारी

क्र0	दिनांक	विषय	स्तर	स्थान	भागीदारी
1	3–4जून,1992	संपूर्ण साक्षरता अभियान	राज्य	शिमला	8
2	4जून,1992	संपूर्ण साक्षरता अभियान	राज्य	शिमला	8
3	10–14जून,1992	संपूर्ण साक्षरता अभियान	राज्य	शिमला	6
4	11–13 जुलाई,1992	संपूर्ण साक्षरता अभियान	राज्य	शिमला	6
5	6–9अगस्त,1993	संपूर्ण साक्षरता अभियान	राष्ट्रीय	मंडी	45

बाह्य मूल्यांकन

क्र0	दिनांक	विषय	मूल्यांकन कर्ता
1	नवम्बर,1993	संपूर्ण साक्षरता अभियान का मूल्यांकन	प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के संयुक्त निदेशक आदिशेषेया, डा. ईला पटेल (दिल्ली) तथा डा. एन.एन. पंगोत्रा,चंडीगढ़
2	जुलाई,1995	संपूर्ण साक्षरता अभियान के मूल्यांकन का जायजा	राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के महानिदेशक श्री भास्कर चटर्जी का दौरा।
3	1नवम्बर,1997	उतर साक्षरता अभियान का मूल्यांकन	मीडिया रिसर्च ग्रुप दिल्ली

❖ सभी विकास खंडों में 2085 उतर साक्षरता प्रतिभागियों से बातचीत कर मूल्यांकन किया गया विस्तृत जानकारी निम्नलिखित है:–

मौखिक साक्षात्कार

1227	267	796	204
उतर साक्षरता प्रतिभागी	वार्ड,पंचायत खंड व जिला कार्यकर्ता	उतर साक्षरता प्रतिभागी	ग्रामीण स्तर पर बाहरी व्यक्तियों से

कमेटियों का गठन

❖ विकास खंड की कमेटियों का गठन — जून,1992

❖ उप क्षेत्रीय कमेटियों का गठन — जुलाई,1992

❖ पंचायत स्तरीय कमेटियों का गठन — अगस्त,1992

❖ गांव स्तरीय कमेटियों का गठन — सितंबर,1992

सर्वेक्षण

- सितंबर,1992 में समस्त पंचायतों में शिक्षा संबंधी सर्वेक्षण किया गया।
- जुलाई,1994 से अप्रैल,1995 में सदर, रिवालसर , सुंदरनगर व करसोग खंडों की 129 पंचायतों में2,62,941 व्यक्तियों का स्वास्थ्य सर्वेक्षण किया।

जुलाई,1994से अप्रैल,1995	कुल	बच्चे	बालक	बालिका
	262941	292022	14688	14514

बैठकों का विवरण

क्र0	दिनांक	विषय	स्तर	उद्देश्य
1	31 जुलाई,1992	संपूर्ण साक्षरता अभियान	जिला	सीखने का आनंद
		शिक्षा का लोक व्यापीकरण	खंड धर्मपुर	मेहमान,मेजवान पद्धति पर 1500 महिलाओं ने भाग लिया।
		महिला सशक्तिकरण	जिला	
		पंचायती राज तथा शिक्षा		

प्रदर्शनी तथा मेले तथा उत्सवों का विवरण

क्र0	दिनांक	विषय	स्थान	उद्देश्य
1	2–8मार्च	साक्षरता प्रदर्शनी	शिवरात्रि मेला मंडी	साक्षरता अभियान का प्रसार प्रचार।
2	29 दिसंबर,1992	साक्षरता उत्सव	सेरी मंच मंडी	कला जत्था कार्यक्रम अक्षर चेतना का विशेषांक का विमोचन, नवसाक्षरों को सम्मानित करना।
3	28 मार्च,1995	बलमेला	गोपालपुर	सीखने का आनंद
4		विकास दस्तक यात्रा	सभी खंडों में	
		समता उत्सव	भरौण पंचायत	

साक्षरता अभियान के अतिरिक्त अन्य विषयों पर आधारित शिविरों का आयोजन

क्र0	विषय	स्थान	उद्देश्य
1	स्वास्थ्य शिविर	प्रेसी पंचायत	822 रोगियों की जांच बारे
2	खाद्य पदार्थो का महत्व समझाने हेतु	पांगणा पंचायत स्तर	खाद्य एवम् पोषाहार विभाग के सहयोग से
3	नेत्र विकित्सा	पंचायत स्तर	राज्य स्वास्थ विभाग के सहयोग से

मूल्यांकन हेतु प्रतिभागियों का विवरण

		महिला	पुरूष	परिणाम
	उतर साक्षरता के 756 प्रतिभागी	86प्रतिशत	14प्रतिशत	56प्रतिशत लोगों ने अभ्यास पुस्तिकों से लाभ प्राप्त कियाा

नोटः– 56प्रतिशत में से 50प्रतिशत ने दक्षता हासिल की थी तथा 32 लोगों ने 70प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

विभिन्न गतिविधियां

- 14जून,1992 को औपचारिक रूप से साक्षरता समिति का गठन
- 15अगस्त,1992 को अक्षर चेतना पत्रिका का विभाग वनमंत्री हरबंस राणा द्वारा किया गया।

- 2अक्तूबर,1992 से 14 नवंबर,1992 तक खंड स्तरीय कला जत्था का भ्रमण।
- 14नवम्बर,1992 से सदर, रिवालसर व सुंदरनगर खंडों में पढ़ाई का शुभारंभ।
- 26जनवरी,1993 को करसोग खंड में साक्षरता अभियान की शुरूआत। खंड की 41 पंचायतों के 23512 निरक्षरों ने पढ़ना शुरू किया।
- महिला कला जत्थे का गठन।
- कुलाह गांव में लोगों की मांग पर अभियान की शुरूआत।
- जंगलों के कटान पर रोक लगी साक्षरता समिति के प्रयासों से।
- मई 1993 में पोस्ट कार्डो से संदेश हेतु नवसाक्षरों के पढ़ने में कम होते रूझान को रोकन हेतु विकास दस्तक यात्रा।
- सभी दस खडों में चमत्कारी जत्थों ने किया अंध विश्वास पर प्रहार।
- 1993 में चौहार घाटी में बादल फटने पर बाढ़ पीढ़ितों की सहायता हेतु साक्षरता कार्यकर्ताओं ने धन, वस्तुएं एकत्रित की।
- 1994 में करसोग खंड के पांगणा गांव में साक्षरता कार्यकर्ता द्वारा रक्त दान शिविर लगाया गया।

- 1995 में गोपालपुर खंड में पर्यावरण सप्ताह मनाया गया। पन्द्रह सौ हेक्टेयर भूमि में एक लाख बीस हजार पौधे रोपे गये।
- 26जनवरी,1994को सदर खंड,रिवालसर तथा करसोग में उतर साक्षरता अभियान शुरू हुआ।

विभिन्न गतिविधियां

- 15अप्रैल,1995 को धर्मपुर, गोपालपुर ,सराज, गोहर, द्रंग, चौंतड़ा खंडों में साक्षरता अभियान की शुरूआत हुई।
- प्रारंभिक शिक्षा का लोक व्यापीकरण हेतु धर्मपुर खंड में बच्चों का विज्ञान उत्सव के माध्यम से वातावरण निर्माण ।
- मार्च1994 को हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति के सहयोग से एकता कला जत्था निकाला गया ताकि अक्षर सैनिकों में पुनः जोश भरने हेतु साक्षरता अभियान को गति प्रदान की जा सके।
- 15अगस्त 1995 को आजादी की रक्षा के लिए साक्षरता की जरूरत पर उड़न दस्ता निकाला गया जिसने राष्ट्रीय एकता व अन्य विषयों से संबंधित गीतों से लोगों को जागरूक किया।

- 5जून,1997 को पर्यावरण दिवस के अवसर पर पेड़ों से कीलें व साईन बोर्ड मंडी शहर के आसपास से हटाए गए।
- ग्रामीण लोगों को संसदीय प्रणाली से अवगत कराने के लिए कई पंचायतों में जन संसदें करवाई गई।
- साक्षरता कार्यकर्ताओं के सहयोग से पर्यावरण व साक्षरता दिवसों का आयोजन किया गया।
- जल स्रोतों की सफाई की।
- जनसहयोग से पाठशालाओं में सफेदी करवाई गई।

“सतत शिक्षा कार्यक्रम”

जिला मंडी में “सतत शिक्षा कार्यक्रम” की तैयारी वर्ष 1996 में शुरू हो गई थी। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा उपलब्ध करवाई गई मार्गदर्शिका के उपरांत 22 से 24 जुलाई,1996 को राज्य स्तरीय “सतत शिक्षा कार्यक्रम” परियोजना निर्माण कार्यशाला का आयोजन राज्य संसाधन केन्द्र शिमला (हि.प्र.) के सहयोग से व्यास सदन मंडी में किया गया। इस कार्यशाला में पूरे राज्य से जिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिला मंडी में परियोजना निर्माण हेतु मंडी साक्षरता समिति के सचिव, अतिरिक्त सचिव, कोषाध्यक्ष सहित पांच सदस्यीय कोर ग्रुप का गठन किया गया। 25 नवम्बर,1997 को श्री प्रबोध सक्सेना, उपायुक्त एवम् अध्यक्ष मंडी साक्षरता समिति के नेतृत्व में चार सदस्यीय दल ने “ राष्ट्रीय साक्षरता मिशन” के समक्ष परियोजना को प्रस्तुत किया जिसे मिशन ने स्वीकृति प्रदान कर दी। परियोजना स्वीकृत होने के बाद होटल आर्यन बेंग्लों मंडी में जिला मुख्यालय में कार्यरत कार्यकर्ताओं की 29–30 दिसंबर,1997 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन परियोजना के संचालन की योजना बनाने हेतु किया गया। ताकि जिला स्तर के वार्ड स्तर पर सहभागी समितियों का गठन, पूर्णकालिक तथा अंशकालिक कार्यकर्ताओं की पहचान सतत शिक्षा कार्यक्रम हेतु सर्वेक्षण प्रपत्र पर चर्चा की जा सके। हिमाचल दिवस के अवसर पर 15 अप्रैल,1998 को “सतत शिक्षा कार्यक्रम” का शुभारंभ तत्कालीन लोक

निर्माण मंत्री श्री सुखराम ने किया। इस अवसर पर उन्होंने शैक्षणिक उपसमिति द्वारा तैयार की गई पुस्तक "एक सपने का सफर" का भी विमोचन किया। इस कार्यक्रम में पूरे जिला के सभी खंडों के 1500 से अधिक नवसाक्षरों , जनचेतना गाईडों व साक्षरता कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। समारोह में नवसाक्षरों की पठन–पाठन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कुर्सी दौड़, घड़ादौड़, रस्सा कस्सी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

विजेता नवसाक्षरों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये। इस दिन नवसाक्षरों द्वारा बनाई गई सामग्री की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

संगठनात्मक ढांचा

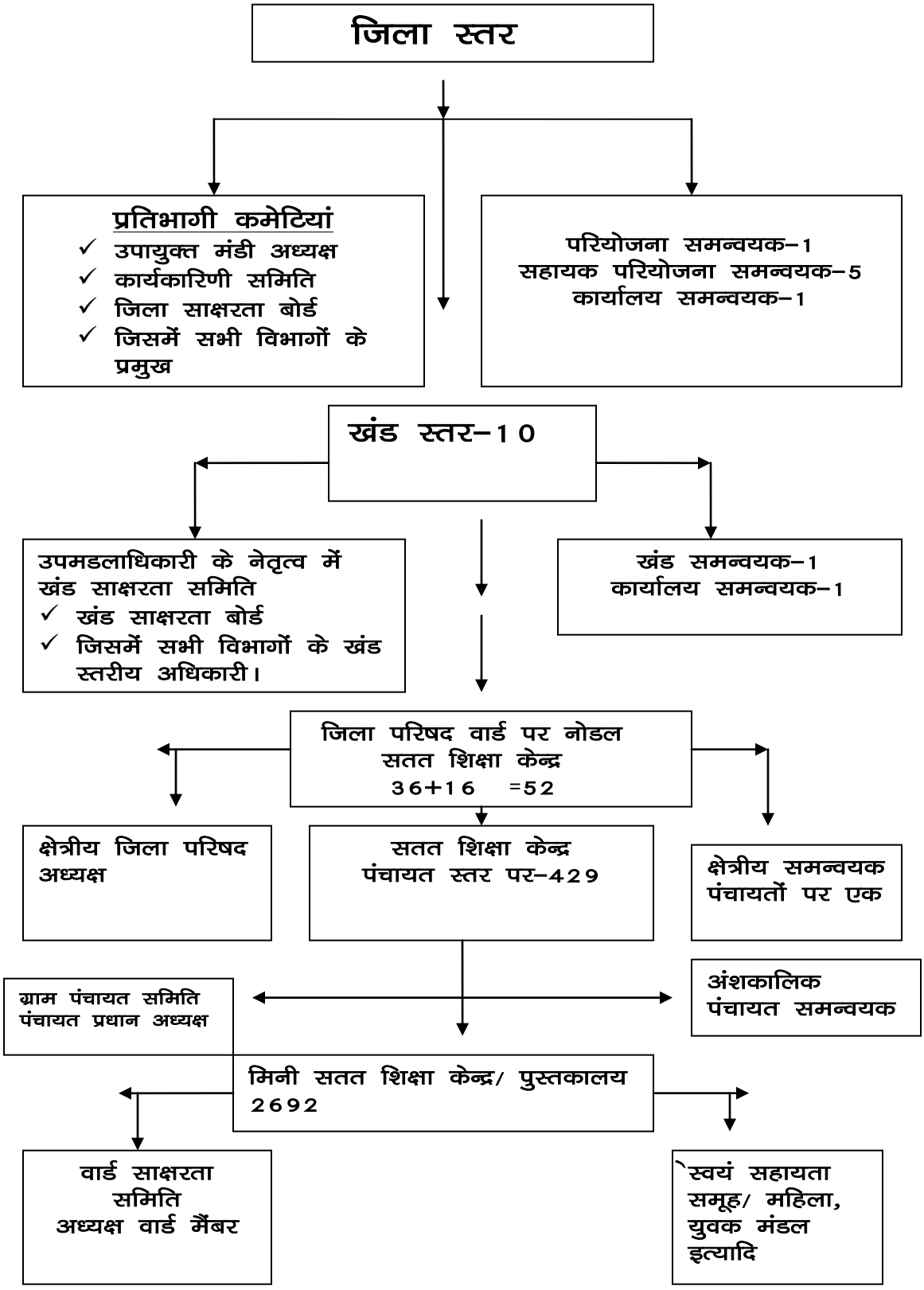
जिला स्तर
प्रतिभागी कमेटियां
✓ उपायुक्त मंडी अध्यक्ष
✓ कार्यकारिणी समिति
✓ जिला साक्षरता बोर्ड
✓ जिसमें सभी विभागों के प्रमुख
परियोजना समन्वयक–1
सहायक परियोजना समन्वयक–5
कार्यालय समन्वयक–1
खंड स्तर–10
उपमडलाधिकारी के नेतृत्व में खंड साक्षरता समिति
✓ खंड साक्षरता बोर्ड
✓ जिसमें सभी विभागों के खंड स्तरीय अधिकारी।
खंड समन्वयक–1
कार्यालय समन्वयक–1
जिला परिषद वार्ड पर नोडल सतत शिक्षा केन्द्र
36+16 =52
क्षेत्रीय जिला परिषद अध्यक्ष
सतत शिक्षा केन्द्र पंचायत स्तर पर–429
क्षेत्रीय समन्वयक पंचायतों पर एक
ग्राम पंचायत समिति पंचायत प्रधान अध्यक्ष
अंशकालिक पंचायत समन्वयक
मिनी सतत शिक्षा केन्द्र/ पुस्तकालय
2692
वार्ड साक्षरता समिति
अध्यक्ष वार्ड मैंबर
`स्वयं सहायता समूह/ महिला, युवक मंडल इत्यादि

विशेषज्ञ समूहों का गठन

सतत शिक्षा के सफल कार्यान्वयन हेतु तीन विशेषज्ञ समूहों का गठन किया गया। (क) मानीटरिंग समूह. (ख) प्रशिक्षण समूह. (ग) शैक्षणिक समूह। इन समूहों में 40 से 50 व्यक्तियों को शामिल किया गया। वर्ष 1999 में मंडी जिला की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए सतत शिक्षा कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन हेतु जिले में 10 खंडों की अपेक्षा 12 खंड बनाए गए। जिसमें बालीचौकी और निहरी के लिए अलग से खंड समन्वयक नियुक्त किये गये थे।

जन चेतना गाइडों का विवरण

कुल जन चेतना गाईड	2582		जन चेतना गाइडों का शैक्षणिक स्तर	
पुरूषों की संख्या	1052		ऑठवी से नीचे	145
महिलाओं की संख्या	1530		ऑठवी	438
अनुसूचित जाति की संख्या	599		दसवीं	1614
अनुसूचित जन जाति की संख्या	16		जमा दो	307
			स्नातक	68

पंचायत समन्वयकों का विवरण

कुल पंचायत समन्वयक	382		पंचायत समन्वयक का शैक्षणिक स्तर	
पुरूषों की संख्या	221		दसवीं से नीचे	47
महिलाओं की संख्या	161		दसवीं	255
अनुसूचित जाति की संख्या	87		जमा दो	55
अनुसूचित जन जाति की संख्या	3		स्नातक	20
			स्नातकोत्तर	5

सहायक खंड पंचायत समन्वयकों का विवरण

कुल सहायक खंड समन्वयक	51		सहायक खंड समन्वयक का शैक्षणिक स्तर	
पुरूषों की संख्या	40		दसवीं से नीचे	2
महिलाओं की संख्या	11		दसवीं	40
अनुसूचित जाति की संख्या	7		जमा दो	5
अनुसूचित जन जाति की संख्या	0		स्नातक	3
			स्नातकोत्तर	1

वर्ष 2002 में जिले में पुनः 12 की अपेक्षा पूर्ववतः 10खंड ही रखे गये। शेष संगटनात्मक ढांचा ज्यों का त्यों रहा।

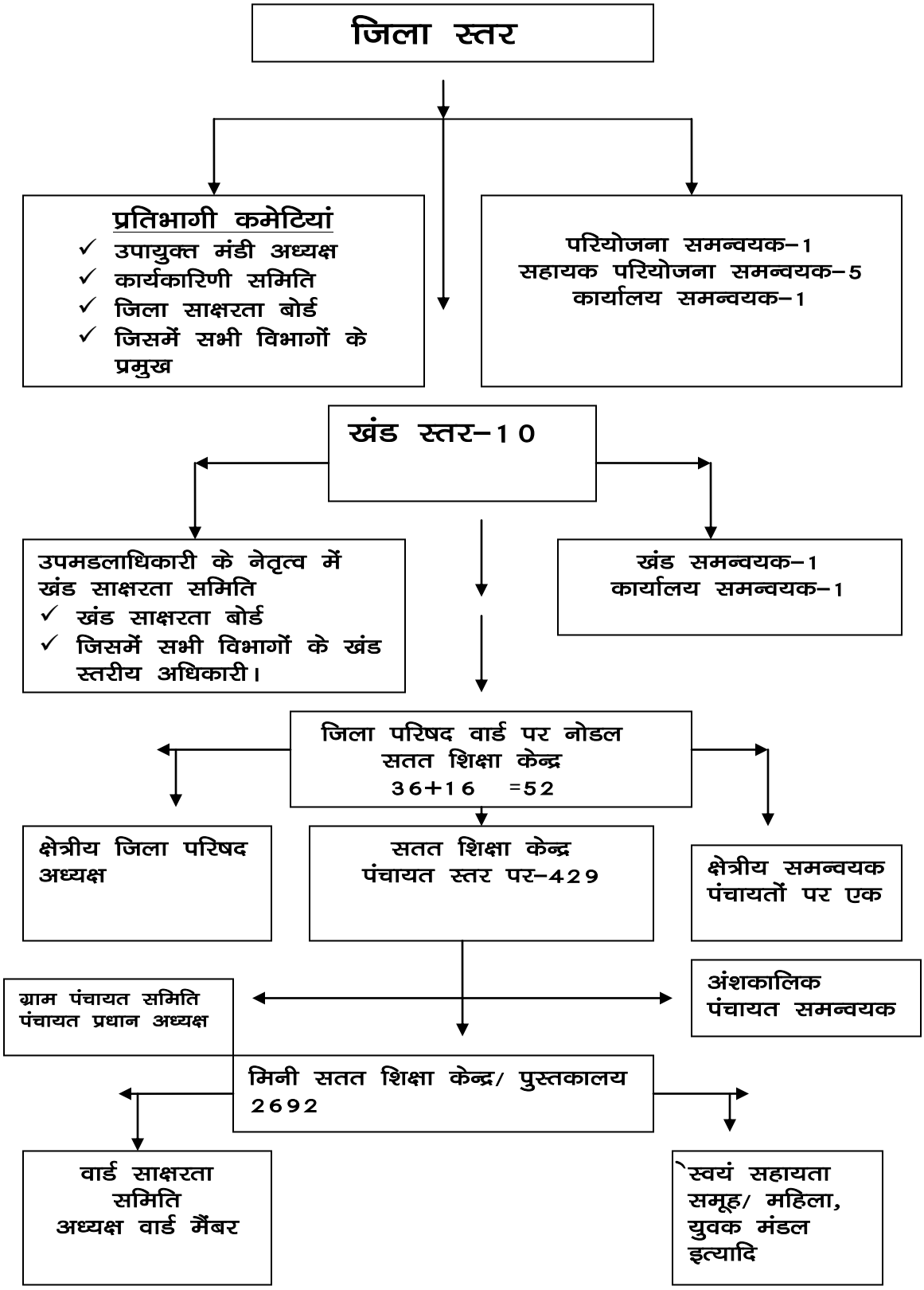

वर्ष2003–2004 में संगठनात्मक ढांचा ज्यों का त्यों रहा। केवल कार्यकारिणी के सात पदाधिकारी तथा 19 सदस्य रखे गये। इसी प्रकार खंड साक्षरता समिति में पांच पदाधिकारी तथा 10 सदस्य रखे गये।

विभिन्न दिवसों का आयोजन वर्ष 1998

क्र.	दिवस	विषय	मुख्य अतिथि	स्तर	प्रतिभागी
1	15अप्रैल– हिमाचल दिवस	सतत शिक्षा कार्यक्रम का शुभारंभ	लोक निर्माण मंत्री पंडित सुखराम	जिला	1500
2	5मई–साक्षरता मिशन स्थापना दिवस	दसवीं वर्ष गांव मनाने हेतु राज्य स्तरीय समारोह	राज्यपाल वी.एस.रमा देवी	राज्य	
3	5 जून –विश्व पर्यावरण दिवस	पोलीथीन, बाबड़ी, जल स्रोतों व रास्तों की सफाई, पेड़ों को बोर्ड व कील मुक्त करने हेतु		जिला	
4	11जुलाई–विश्व जनसंख्या दिवस	बढ़ती जनसंख्या पर विचार विमर्श तथा पौधरोपण कार्य जन सहभागिता से		खंड	
5	15 अगस्त–स्वतंत्रता दिवस	जन सभाओं का आयोजन तथा ध्वजारोहण	सराज खंड में जजैहली के विधायक जय राम ठाकुर	खंड	
6	8सितंबर– अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस	244 पंचायतों में सतत शिक्षा कार्यक्रम का प्रारंभ	सरकाघाट में प्रबोध सक्सेना, उपायुक्त,मंडी	खंड	
7	6दिसंबर– पोलियो निवारण दिवस	बच्चो को दवा पिलाने के लिए प्रेरित करना	राज्यपाल वी.एस.रमा देवी	जिला	

विभिन्न दिवसों का आयोजन वर्ष 1999

क्र.	दिवस	विषय	मुख्य अतिथि	स्तर	प्रतिभागी
1	15अप्रैल,– हिमाचल दिवस	नव साक्षर सांस्कृतिक प्रतियोगिता (गीत, पौराणिक कथाएं, रंगोली)	.....	जिला उरला	
2	31मई–विश्व तम्बाकू दिवस	धूम्रपान निषेद्ध पर विचार विमर्श।	.....	जिला मंडी	
3	5 जून –विश्व पर्यावरण दिवस	पोलीथीन, बाबड़ी, जल स्रोतों व रास्तों की सफाई, पेड़ों को बोर्ड व कील मुक्त करने हेतु	.....	खंड	1596
4	11जुलाई–विश्व जनसंख्या दिवस	सुखद परिवार पर चर्चा	वनमंत्री श्री रूपसिंह ठाकुर	जिला	600
5	15 अगस्त–स्वतंत्रता दिवस	14अगस्त की रात को मोमबती जलाकर त्यौहार का माहौल बनाया	.....	पंचायत	247 पचायतें में
6	8सितंबर–अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस	"साक्षरता से एकता" के लिए मानव श्रृंखला बनाई	.....	खंड	1900
7	3दिसंबर– लैम्प दिवस	पल्स पोलियों के प्रति जागरूकता लाने हेतु	.....	पंचायत	53पंचायतें में 1111 कार्यकर्ता
8	10दिसंबर– अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस	प्रजनन के अधिकार पर नव साक्षरों की भाषण प्रतियोगिता	.....	जिला छतरी में	3000

विभिन्न दिवसों का आयोजन वर्ष 2000में

क्र.	दिवस	विषय	मुख्य अतिथि	स्तर	प्रतिभागी
1	8मार्च–अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु आरक्षण के मुददे पर प्रधानमंत्री को 4555कार्ड भेजे गये।		पंचायतों पर	82 पंचायतों की 546 महिलाएं
2	7अप्रैल– विश्व स्वास्थ्य दिवस	स्वास्थ्य सम्बन्धी पर्चे बांटे तथा कला जत्था कार्यक्रम की प्रस्तुति	.....	खंड	
3	8मई– रैडक्रॉस दिवस	बेबी शो का आयोजन	.....	केवल दो खंडो में	
4	1अगस्त–स्तनपान दिवस	सेमिनार का आयोजन		खंड स्तर पर सभी पंचायतों में	
5	30सितंबर से 15अक्तूबर	भारत दर्शन कला जत्था कार्यक्रम		जिला स्तर	

विभिन्न दिवसों का आयोजन वर्ष 2002

क्र.	दिवस	विषय	मुख्य अतिथि	स्तर	प्रतिभागी
1	15अप्रैल–हिमाचल दिवस	साक्षरता समिति के 10 वर्ष पूरे होने पर		क्षेत्रिय	9091
2	5 जून–विश्व पर्यावरण दिवस	जिले में 808 जल स्रोतों की सफाई	.....	क्षेत्र/पंचायत	
3	11 जुलाई–विश्व जनसंख्या दिवस	जनसंख्या प्राकृतिक संसाधनों पर बोझ	.....		690प्रतिभागी 4522 पौधे रोपे गये
4	15अगस्त–स्वतंत्रता दिवस	पौधरोपण,महिलाओं की विभिन्न प्रतियोगिताएं	.....	खंड	9820
5	8सितबर अंतराष्ट्रीय साक्षरता दिवस	जिला पर रैली का आयोजन		जिला	
5	10दिसंबर–विश्व मानवाधिकार दिवस	कन्या भ्रूण हत्या विरोधी दिवस		जिला	2000

विभिन्न दिवसों का आयोजन वर्ष 2003–2004

क्र.	दिवस	विषय		स्तर	प्रतिभागी
1	26 जनवरी–गणतंत्र दिवस	मौलिक अधिकार और संविधान पर चर्चा	सभी सतत शिक्षा केन्द्रों पर		
2	8मार्च–अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	स्वयं सहायता समूहों की फेडरेशन		जिला	2000
3	5जून–पर्यावरण दिवस	सफाई अभियान		खंड	700
4	8सितंबर–अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	समूह द्वारा तैयार की गई वस्तुओं की प्रदर्शनी व बिक्री		जिला	400
5	10 दिसंबर–मानवाधिकार दिवस	कन्या भ्रूण हत्या व महिलाओं में खून की कमी बारे चर्चा		खंड/पंचायत	

विभिन्न दिवसों का आयोजन वर्ष 2005

क्र.	दिवस	विषय		स्तर	प्रतिभागी
1	8मार्च–अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	महिला फैडरेशन को सशक्त बनाने व गतिविधियों के निर्धारण हेतु		जिला	250 महिलाएं
2	5जून–पर्यावरण दिवस	स्कूल में बने इको क्लबों द्वारा कूड़ा–कर्कट प्रबंधन हेतु दो–दो गडढ़ों का निर्माण			156 क्लब
3	11 जुलाई–विश्व जनसंख्या दिवस	1500 पौधों का पौधरोपण			35 क्लब

विभिन्न दिवसों का आयोजन वर्ष 2006

क्र.	दिवस	विषय		स्तर	प्रतिभागी
1	8मार्च–अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में		खंड	

सतत शिक्षा कार्यक्रम के तहत सर्वेक्षण कार्य

क्र.	माह/ वर्ष	सर्वेक्षण कार्य	माध्यम	विवरण
1	जनवरी से मार्च 1998 तक	सतत शिक्षा संबंधी कार्य हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	पुर्नगठित समिति, पूर्णकालिक व अंशकालिक कार्यकर्ताओं द्वारा
2	21 मई,1998	आय प्रदायक कार्यक्रम हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	बाल्ट पंचायत में
3	सितंबर से अक्तूबर, 1998	विकलांग व्यक्तियों का सर्वेक्षण	प्रपत्र के माध्यम से	जिले की 382 पंचायतों में सभी किस्म के 3891 विकलांग पाए गए।
4	अप्रैल,1999	स्कूलों में कच्चे व पक्के कमरे, बच्चों तथा अध्यापकों की संख्या जानने हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	जिले की 1689 प्राथमिक पाठशालाओं में(207 मिडल स्कूल,141 उच्च पाठशाला, 70 वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला)
5	जुलाई–अगस्त,1999	प्राकृतिक जलस्रोतों जैसे कुआं, बावड़ी ,झरना, खड्ड,छपड़ा,खातियों की संख्या जानने हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	जिले की 382 पंचायतों में
6	1999	ग्राम सभा संबंधी जानकारी आम लोगों की राय तथा पंचायत प्रतिनिधियों की राय जानने हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	जिले की 382 पंचायतों में
7	मार्च,2000	सूचना,प्रशिक्षण व सीखने संबंधी जरूरतों की जानकारी हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	जिले की 39 पंचायतों में
8	सितंबर,2002	सूचना,प्रशिक्षण व सीखने संबंधी जरूरतों की जानकारी हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	जिले की 382 पंचायतों में
9	जुलाई–अगस्त,2002	स्वधार परियोजना के लिए पीड़ित महिलाओं की जानकारी लेने हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	पूरे जिला में
10	सितंबर से अक्तूबर, 2002	अपंगों की जानकारी हेतु	प्रपत्र के माध्यम से	पूरे जिला में

सर्वेक्षणों का उद्देश्य

सूचना प्रशिक्षण एवम् सीखने संबंधी जरूरतों की पहचान बारे किए गये सर्वेक्षण का उद्देश्य लोगों को सूचना, प्रशिक्षण एवम् सीखने संबंधी वास्तविक जरूरतों की पहचान करना और पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत करने के लिए वार्ड/ ग्राम सभाओं में जन भागीदारी को बढ़ावा देकर सुक्ष्म स्तरीय योजना निर्माण के लिए माहौल तैयार करना/ सर्वेक्षण में निकलकर आई लोगों की जरूरतों के आधार पर इन जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थानीय स्तर पर योजना निर्माण व आय प्रदायक गतिविधियों के साथ लोगों को जोड़ना है। उपर्युक्त सर्वेक्षण जिले की 299 पंचायतों में किया गया और 1177 वार्ड स्तरों पर इसका समायोजन किया गया। सर्वेक्षण की रिपोर्ट को 173 ग्राम सभाओं में प्रस्तुत किया गया। चुनाव प्रचार के दौरान विभिन्न राजनैतिक गतिविधियों में शामिल होने के कारण सर्वेक्षण कार्य बंद करना पड़ा जिसे पुनः मार्च 2003 से प्रारंभ किया गया।

वर्ष 2003–2004 में पशुपालन सर्वेक्षण, आय प्रदायक सर्वेक्षण, निःशक्त व्यक्तियों का सर्वेक्षण, पीड़ित महिलाओं का सर्वेक्षण आई. आर.डी.पी. सर्वेक्षण सहित कुल पांच तरह के सर्वेक्षण हुए।

वर्ष 2004–05 में दुधारू पशुओं का सर्वेक्षण, समूहों द्वारा किये जाने वाले कार्यो का सर्वेक्षण तथा संपूर्ण स्वच्छता हेतु सर्वेक्षण किया गया।

कपार्ट परियोजना के तहत जिले की 50 पंचायतों में खुरली, प्लेटफार्म बनाने के लिए सर्वेक्षण कराया गया।

कृषि में विविधिकरण परियोजना के तहत दो खंडों की सात पंचायतों का सर्वेक्षण कृषि बागवानी व पशुपालन की नई तकनीकी जानकारी देने हेतु विकास किया गया।

बेसहारा महिलाओं तथा 06–14 वर्ष के अनाथ बच्चों का भी सर्वेक्षण कराया गया।

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के सहयोग से पूर्ण स्वच्छता अभियान हेतु सर्वेक्षण करवाया गया।

वर्ष 2005–2006

अक्तूबर से दिसंबर,2005 में कृषि विविधकरण परियोजना के तहत डेयरी समूह के लाभार्थियों के पशुओं का सर्वेक्षण करवाया गया। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य था कि पोषाहार मिलने के उपरांत लाभार्थियों को उससे कितना लाभ हुआ।

वर्ष 1998 में किए गए सर्वेक्षणों से निम्नलिखित बाते निकलकर आई :–

1. लोग कृषि से हटकर अन्य कार्य करना चाहते है ताकि अतिरिक्त आय प्राप्त हो सकें।
2. लोगों का रूझान डेयरी फार्मिंग, खरगोश पालन, मधुमक्खी पालन, ग्रामीण दस्तकारी, मछली पालन, व्यवसायिक प्रशिक्षण बैमौसमी सब्जियों के उत्पादन की ओर दिखाई पड़ा।
3. सर्वे से प्राप्त विश्लेषण के आधार पर ज्ञात हुआ कि पशुपालन विभाग, कृषि विभाग , कृषि विज्ञान केन्द्र एवम् कृषि विश्वविद्यालय, मतस्य विभाग, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण तथा जिला औद्योगिक कन्द्र से सहयोग वांछित है, जिसके लिए उनके साथ संपर्क कर भविष्य की कार्ययोजना को कार्यरूप देना अनिवार्य है।

सतत् शिक्षा कार्यक्रम के तहत समिति द्वारा की गई गतिविधियां

स्वर्ण जयंती जत्था

जिला साक्षरता समिति द्वारा जिला स्तरीय कला जत्था “एक सपने का सफर” 15 अप्रैल,1998 से 5 मई,1998 तक संचालित किया गया। इस जत्थे द्वारा 12 विकास खंडों में 24 स्थानों पर कार्यक्रम दिया गया जिसमें 128 पंचायतों के लगभग 3500 लोगों ने कार्यक्रम देखा व सराहा।

विज्ञान जत्था

द्वितीय चरण में कला जत्थे ने 9सितंबर से 16 सितंबर,1998 तक ग्रामीण स्तर पर जहां जाने के लिए सड़के व अन्य सुवधिाएं नहीं थी, ऐसे क्षेत्रों में कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

दीवार लेखन

जन चेतना केन्दों को प्रचारित करने हेतु दीवार पर या बोर्ड पर जन चेतना केन्द्रों का नाम व अन्य जानकारी दी गई।

14–15 अप्रैल,1998 को व्यक्तिगत प्रतिभा विकास कार्यक्रम के तहत नवसाक्षरों की खेलखूद व सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं जिसमें समूहगान, एकलगीत, रस्साकस्सी, पठन पाठन, घड़ा फोड़, कुर्सी दौड़, नाटी, शहनाई वादन, बांसुरी वादन इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें 35 नवसाक्षरों ने भाग लिया। इस अवसर पर नवसाक्षरों द्वारा निर्मित सामग्री की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

वर्ष 1998 में व्यक्तिगत विकास कार्यक्रम के तहत नवसाक्षरों को विभिन्न कार्यालयों जैसे पंचायतघर, पटवारखाना, पुलिस थाना, स्वास्थ्य केन्द्र, डाकघर इत्यादि में ज्ञानवर्द्धन हेतु भ्रमण करवाया जिसमें प्रथम चरण में 128 पंचायतों में से 59 पंचायतों के 600 नवसाक्षरों तथा 60 साक्षरता कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

6 दिसंबर,1998 को रैडक्रॉस मेले में अब तक प्रकाशित पठन पाठन सामग्री की साक्षरता प्रदर्शनी व महिला सशक्तिकरण हेतु प्रदर्शनी लगाई। समारोह में राज्यपाल श्रीमती वी.एस.रमा देवी मुख्य अतिथि थी।

29 सितंबर,1998 को स्वास्थ्य विभाग की ओर से पोलियो प्रतिरक्षण अभियान के तहत पल्स पोलियों हेतु बैठक का आयोजन किया गया। 6 दिसंबर 1998 को मंडी साक्षरता समिति द्वारा पूरे जिले के अधिकतर बूथों पर स्वयंसेवी नियुक्त किये जिन्होंने स्वास्थ्य विभाग के साथ बच्चों को दवा पिलाने में मदद की।

वर्ष 1999 में की गई गतिविधियों का विवरण

- नोडल प्रेरकों की साक्षरता सामग्री को खुद को आत्मसात करने के लिए वाचन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें 382 पंचायतों के नोडल प्रेरकों तथा स्थानीय लोगों ने भाग लिया।
- जिला में महिला स्वास्थ्य व बढ़ती जनसंख्या को लोगों के बीच ले जाने के उद्देश्य से जिले की समस्त पंचायतों में 12 जत्थों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किये गया जिसे 62000 लोगों ने देखा।
- 15 अप्रैल, 1999 को हिमाचल दिवस के अवसर पर नवसाक्षरों की गीत, पौराणिक गाथाएं तथा रंगोली की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।
- अक्तबूर,1999 में स्कूली बच्चों में स्वास्थ्य पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- 10 दिसंबर,1999 को मानवाधिकार अवसर पर प्रजनन के अधिकार पर नवसाक्षरों की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- माह दिसंबर 1999 में स्वास्थ्य विभाग के साथ मिलकर यौन रोग एवम् एड्स पर 178 स्थानों पर शिविरों का आयोजन किया गया

जिसमें 1026 लोगों ने भाग लिया। उसी बीच इस संबंध में 5000 लीफलैट बांटे गये।

- ❖ 6दिसंबर,1999 को पल्स पोलियों अभियान के तहत 871 बूथों में से 648 बूथ पर साक्षरता कर्मियों ने 0–5 वर्ष के बच्चों को दवा पिलाने में मदद की।
- ❖ वर्ष 1999 में स्वयं सहायता समूह निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ की।

वर्ष 2000 में की गई गतिविधियों का विवरण

- ❖ जनवरी से मार्च 2000 में जीवन गुणवता सुधार कार्यक्रम के तहत मां का स्वास्थ्य, बच्चों का स्वास्थ्य तथा यौन रोग एवम् संबंधी जानकारी दी गई। इसका मुख्य उद्देश्य जन भ्रांतियों को मिटाकर लोगों में स्वास्थ्य के प्रति सही जानकारी देना था। ये कार्यक्रम जिले की 325 पंचायतों में किए गए जिसमें 10351 महिलाओं, 943 पुरूषों ने भाग लिया इसमें 204 साक्षरता कार्यकर्ताओं तथा 100 स्वास्थ्य विभाग व 3. आई.सी.डी.एस. कार्यकर्ताओं ने स्रोत व्यक्ति के रूप में भागीदारी निभाई।
- ❖ शिक्षा विभाग के सहयोग से जिले के 1789 प्राथमिक स्कूलों में से 1500 स्कूलों में माता अध्यापक संघ गठित किये गये।
- ❖ मल्लर मॉडल पर आधारित जिला की 382 पंचायतों ने 190 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया।
- ❖ जिले के सरकारी स्कूलों के कमरे, बच्चे तथा अध्यापक संबंधी जानकारी प्राप्त की गई।
- ❖ जिला की 382 पंचायतों के 2582 वार्डो में प्राकृतिक जल स्रोतों संबंधी जानकारी प्राप्त की गई ताकि इनका रखरखाव करके पानी से होने वाली बीमारियों को रोका जा सके।

वर्ष 2002 में की गई गतिविधियों का विवरण

- वर्ष 2002 में 2692 लघु सतत शिक्षा केन्द्रों को पुनः जीवित किया तथा पंचायत समन्वयकों की नव नियुक्तियों का कार्य किया गया।
- समिति द्वारा जिले के 2692 वार्डो में 2640 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया जिनके माध्यम से 30310 महिलाओं को संगठित किया गया। वर्ष 2002 तक इन समूहों ने 47,74,664/– रूपए की बचत की। 88 समूहों द्वारा बैंकों से 14,65,000/– रूपए ऋण प्राप्त किया।

- बाबा साहेब हस्तशिल्प विकास योजना में जिला उद्योग केन्द्र मंडी के सहयोग से 48 हस्त शिल्पियों के समूह गठित किये गये।
- वर्ष 2002 में पारंपरिक जल स्रोतों पर छतों के निर्माण हेतु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें कुल पांच खंडों सदर,सराज,करसोग, गोहर व सुंदरनगर के 75 जल स्रोतों पर छत निर्माण कार्य किया गया।
- वर्ष 2002 में करसोग में कृषि, स्वास्थ्य तथा पशुपालन संबंधी शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें क्रमशः 135, 44 तथा 115 लोगों ने भाग लिया तथा सराज में बागवानी संबंधी शिविर लगाया गया जिसमें 181 लोगों ने भाग लिया।

वर्ष 2003 में की गई गतिविधियों का विवरण

- अक्तूबर,2003 से फरवरी,2004 तक 75 पंचायतों के 150 वार्डो में 150 जल स्रौतों में खुरली निर्माण कार्य किया । 200 वार्डो में 200 जल स्रोतों में प्लेटफार्म निर्माण कार्य किया गया।
- दिसंबर 2003 से जनवरी,2004 तक 5 विकास खंडों के 476 वार्डो में 23000 जल मित्र पौधरोपण कार्य किया।
- फरवरी,2004 में 5 विकास खंडों की 78 पंचायतों में जल स्रोतों की सफाई व पानी को कैसे साफ रखें पर शिविर आयोजित किये गये जिसमें 2122 लोगों ने जिसमें 1899 महिला तथा 223 पुरूषों ने भाग लिया।
- 2003–2004 में मंडी नगर पर्यावरण एवम् स्वच्छता अभियान चलाया गया। शहर के चार वार्डो में 20 इक्को क्लबों का गठन किया गया।
- 5 मार्च,2003 से अप्रैल,2004 तक 10 खंडों ने पेयजल स्वच्छता कला जत्था को प्रशिक्षण दिया गया जिसमें 28 कलाकारों ने भाग लिया। जिन्होंने 335 पंचायतों में कार्यक्रम प्रस्तुत किये।
- 2003–2004 में 2692 लघु पुस्तकालयों में 55435 लोगों ने ज्ञान अर्जित किया।
- 8सितंबर,2004 को कार्यालय भवन निर्माण की नींव रखी गई।

- ❖ वर्ष 2004–2005 में पांरपरिक फसलों के बीज संग्रहण व आर्गेनिक फार्मिग हेतु स्टोर का प्रावधान नाबार्ड के सहयोग से किया गया।
- ❖ वर्ष 2004–2005 में राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका बाकीधार पत्रिका को तैयार किया गया।
- ❖ वर्ष 2004–05 में 150 स्कूलों में इक्को क्लब गठित किये गये जिसमें लगभग 9500 बच्चों को संगठित किया गया।
- ❖ अक्तूबर,2004 में जिला स्तरीय रैडक्रॉस मेले में बच्चों में पर्यावरण संबंधी नाटक, भाषण, चित्रकला, प्रदर्शनी, नारा लेखन तथा काव्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

वर्ष 2005 में की जाने वाली गतिविधियों का विवरण

- ❖ वर्ष 2005 में जिला के 60 स्थलों पर आय प्रदायक कार्यक्रम पर समूह चर्चा का आयोजन किया गया।

- ❖ वर्ष 2005 में विकल्प मार्केटिंग समूह का गठन किया गया जिसने 2 लाख रूपए का ऋण लेकर स्वयं सहायता समूहों से 25 उत्पाद खरीद कर बेचे।

- कार्यालय भवन निर्माण का कार्य सौली खड्ड में प्रारंभ किया गया। कार्यालय भवन निर्माण हेतु समिति ने जन भागीदारी से 5,11,000/– रूपए की धनराशि एकत्रित की।

- 15अगस्त,2005 को संपूर्ण स्वच्छता अभियान हेतु 60 नोडल केन्द्रों में सर्वेक्षण कार्य डी.आर.डी.ए. के सहयोग से किया गया जिसे सितंबर 2005 तक पूरा कर लिया गया।

- नवम्बर,2005 में संपूर्ण स्वच्छता अभियान का शुभारंभ लोक निर्माण एवम् सिंचाई मंत्री ठाकुर कौल सिंह ने किया। इस अवसर पर मुख्यअतिथि ने कला जत्थे को हरी झंडी दिखा कर 10 विकास खंडों में रवाना किया।

वर्ष 2006 में की गई गतिविधियों का विवरण

- 1जनवरी,2006 को समिति ने अपने कार्यालय में काम करना आरंभ किया। नवनिर्मित भवन का उदघाटन समिति के अध्यक्ष एवम् उपायुक्त श्री सुभाशीष पांडा ने किया।

- मार्च,2006को जिले के गोहर खंड की किलिंग पंचायत को पूर्ण रूप से खुले शौच से मुक्त करवाकर प्रदेश में जिले का नाम रोशन किया।

सतत शिक्षा कार्यक्रम के तहत की गई बैठकों का विवरण

वर्ष 1998 में की गई बैठकें

- जिला स्तर पर कोर ग्रुप, पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं, खंड समन्वयकों की प्रतिमाह बैठकें हुई।
- खंड स्तर पर प्रतिमाह दो बैठकें कार्यकर्ताओं की गई।
- पंचायत स्तर पर प्रति माह एक बैठक कार्यकर्ताओं की गई।
- वार्ड स्तर पर प्रतिमाह दो बैठकें कार्यकर्ताओं की हुई।

नोटः– जिला मुख्यालय पर वर्ष 1998 में सतत शिक्षा कार्यक्रम चलाने हेतु कुल 33 बैठकें हुई।

- समिति की शैक्षणिक उपसमिति द्वारा अपना क्षेत्र व्यापक करने तथा विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवों का लाभ उठाने के उद्देश्य से शैक्षणिक समूह का गठन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों के अधिकारियों

तथा तकनीकी विशेषज्ञों को शामिल किया गया। इनकी प्रथम बैठक 27 अप्रैल,1998 को श्री प्रबोध सक्सेना उपायुक्त एवम् अध्यक्ष मंडी साक्षरता समिति की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

- सतत शिक्षा कार्यक्रम में विभिन्न विभागीय अधिकारियों की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 4 मई,1998 को उपायुक्त महोदय की अध्यक्षता में बैठक की गई जिसमें राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के कार्यकारिणी सदस्य श्री के.के.कृष्णकुमार, अखिल भारतीय विज्ञान नेटवर्क के उपाध्यक्ष श्री विनोद रैणा, राष्ट्रीय ओपन स्कूल के निदेशक श्री एस.एस.सांगल तथा राज्य संसाधन केन्द्र से डा. कुलदीप सिंह तंवर ने भाग लिया।

वर्ष 1999 में की गई बैठकों का विवरण

- वर्ष 1999 में जिला मुख्यालय पर पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की 12 बैठकों का आयोजन हुआ जिसमें कार्य की समीक्षा की गई तथा वित्तीय नियमों की जानकारी तथा भविष्य की कार्ययोजना बनाई जाती थी।
- खंड समन्वयकों की 9 बैठकों का आयोजन हुआ। ताकि उनके कार्य की समीक्षा की जा सके।
- जिला आई.ई.सी. क्रोर ग्रुप की दो बैठकें हुई ताकि आई.ई.सी. परियोजना संचालित करने की योजना बनाई जा सके।

वर्ष 2000 में की गई बैठकों का विवरण

- दो बैठके खंड समन्वयकों के कार्य की समीक्षा हेतु की गई।
- एक बैठक जिला पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के काम की समीक्षा हेतु की गई।
- दो वर्षो की समीक्षा व भविष्य की रणनीति बनाने हेतु सचिवों के साथ एक बैठक की गई।

वर्ष 2002–03 में हुई बैठकों का विवरण

- ❖ वर्ष 2002–03 में जिला स्तरीय समन्वयकों की बैठकें हुई ताकि उनको वितरित किये काम की समीक्षा तथा भविष्य की कार्ययोजना बताई जा सके।
- ❖ जिला मानीटरिंग कमेटी की कुल 10 बैठकें हुई ताकि गतिविधियों की रिपोर्ट प्राप्त की जा सके।

वर्ष 2003–04 में की गई बैठकों का विवरण

- ❖ मंडी साक्षरता समिति की कार्यकारिणी की 5 बैठकें हुई ताकि समिति के काम की समीक्षा तथा भविष्य में होने वाली गतिविधियों का निर्धारिण हो सके।
- ❖ पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की महीने में दो बार अर्थात् 24 बैठकें हुई।
- ❖ खंड समन्वयकों की जिला स्तर पर मासिक मानीटरिंग एवम् रिर्पोटिंग हेतु 12 बैठकें हुई।
- ❖ नोडल प्रेरकों तथा पंचायत समन्वयकों की खंड स्तर पर 12 बैठकें हुई।

वर्ष 2004–05 में हुई बैठकों का विवरण

- ❖ जिला स्तर पर खंड समन्वयकों की मासिक रिर्पोटिंग हेतु 13 बैठकें हुई।
- ❖ स्कूलों में बने इक्को क्लबों से संबंधित कोर ग्रुप की एक बैठक हुई।

वर्ष 2005–06 में होने वाली बैठकों का विवरण

- ❖ मंडी साक्षरता एवम् जन विकास समिति की कार्यकारिणी की दो बैठकें हुई।
- ❖ जिला मानीटरिंग कमेटी, राष्ट्रीय हरित कोर कार्यक्रम की दो बैठकें हुई।
- ❖ संपूर्ण स्वच्छता अभियान के कोर ग्रुप की दो बैठकें हुई।

- ❖ वर्ष में दो–दो सभी खंड समन्वयकों की जिला स्तर पर 12 बैठकें हुई।
- ❖ खंड स्तर पर सतत शिक्षा कार्यकर्ताओं के साथ महीने में दो बार 24 बैठकें हुई।
- ❖ नाबार्ड परियोजना क्रियान्वयन एवम् मूल्यांकन कमेटी की तीन बैठकें हुई।
- ❖ स्वयं सहायता समूह मिशन की दो बैठके हुई।
- ❖ अगस्त से 15 सितंबर तक उप क्षेत्रिय स्तर पर संपूर्ण स्वच्छता अभियान कार्यकर्ताओं की बैठके हुई।

सतत शिक्षा कार्यक्रम के दौरान जिला से बाहर से आये प्रतिभागियों का विवरण

- ❖ 7जुलाई,1998 को साक्षरता के प्रभाव अनुसंधान हेतु राज्य संसाधन केन्द्र, शिमला का एक दल मंडी पहुंचा।
- ❖ 26सितंबर,1998 को राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के संयुक्त निदेशक श्री बी.के.अस्थाना ने मंडी का दौरा किया।
- ❖ 1दिसंबर,1998 को राष्ट्रीय साक्षरता अनुसंधान केन्द्र मंसूरी से दो व्यक्तियों का दल मंडी पहुंचा।
- ❖ 30 नवम्बर,1998 को लंदन विश्वविद्यालय से प्रीति चोपड़ा अनुसंधान हेतु मंडी भ्रमण पर आई।
- ❖ 16 से 17 दिसंबर,1999 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन से ए.एम. राजशेखर ने जिला में चल रहे सतत शिक्षा कार्यक्रम का जायजा लेने बारे मंडी का भ्रमण किया।
- ❖ 5 से 7 फरवरी,2000 में भारत ज्ञान विज्ञान समिति की कार्यशाला में मंडी में चल रहे सतत शिक्षा कार्यक्रम की समीक्षा की गई।
- ❖ अगस्त 2002 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की चंडीगढ़ स्थित संस्था ने मंडी में चल रहे सतत शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन किया।
- ❖ 20–21 सितंबर,2002 में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय हिमाचल प्रदेश से 5 सदस्यीय दल ने सतत शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया।

परियोजना निर्माण कार्य

क्र0	विषय	परियोजना	वर्ष	विभाग
1	सूचना, प्रशिक्षण व सीखने संबंधी जरूरतें	आर.सी.एच. परियोजना	1998	स्वास्थ्य विभाग
2	जल स्रोतों पर छतों का निर्माण हेतु	पारंपरिक जल स्रौतों के रखरखाव संबंधी परियोजना	2002	कपार्ट
3	स्वयं सहायता समूहों को बैंकों से जोड़ने हेतु	नाबार्ड परियोजना	2003–04	नाबार्ड, बैंक
4	पशुपालन संबंधी	कृषि विविधिकरण परियोजना	2004–05	डी.आर.डी.ए.
5	50पंचायतों के जल स्रोतों के रखरखाव संबंधी	जल परियोजना	2004–05	कपार्ट, चंडीगढ़
6	50पंचायतों के जल स्रोतों के रखरखाव संबंधी	जल परियोजना	2004–2005	कपार्ट, चंडीगढ़
7	गोहर तथा करसोग खंड की 7 पंचायतों के लिए पशुपालन की नई तकनीकी जानकारी	पशुपालन संबंधी	2004–05	डी.आर.डी.ए.
8	बेसहारा महिलाओं की आवास सुविधा हेतु	बेसहारा महिला परियोजना	2004–05	कपार्ट, दिल्ली

जिला मंडी में आयोजित कार्यशालाओं का विवरण

वर्ष 1998

क्र0	दिनांक	विषय	प्रतिभागी
1	3–5फरवरी,1998	सतत शिक्षा मार्गदर्शिका निर्माण कार्यशाला	12
2	23–25मार्च,1998	जिला स्रौत व्यक्ति प्रशिक्षण कार्यशाला	59
3	26–27मार्च,1998	राज्य स्तरीय सतत शिक्षा कार्यशाला	53
4	7–14 अप्रैल,1998	एक सपने का सफर स्वर्ण जयंती जत्था कार्यशाला	32
5	20–21मई,1998	खंड समन्वयकों व कार्यालय समन्वयकों की कार्यशाला	34
6	25–26जून,1998	साक्षरता के प्रभाव सर्वेक्षण कार्यशाला	15
7	3सितंबर,1998	प्रधानों के प्रशिक्षण बारे कार्यशाला	15
8	1–7सितंबर,1998	विज्ञान जत्था प्रशिक्षण कार्यशाला	48
9	28–30अक्तूबर,1998	व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के तहत महिला सशक्तिकरण कार्यशाला	115

वर्ष 1999

क्र0	दिनांक	विषय	प्रतिभागी
1	12–14मई,1999	प्रशिक्षण की जरूरतों का पता लगाने हेतु	30
2	26मई,1999	स्वयं सहायता समूह हेतु कार्यशाला	37
3	2जुलाई,1999	स्वयं सहायता समूह सामग्री निर्माण हेतु	7
4	21–24जुलाई,1999	जिला स्रौत समूह प्रशिक्षण हेतु	51
5	3–24अगस्त,1999	जन चेतना गाईड प्रशिक्षण	सभी खंडों में
6	1–2सितंबर,1999	सहायक खंड समन्वयकों की आई.ई.सी. परियोजना	80
7	7–13अक्तूबर,1999	कला जत्था स्रौत व्यक्ति	28
8	12नवम्बर से10दिसंबर1999	आई.ई.सी. कला जत्था भ्रमण कार्यशाला	179
9	6दिसंबर,1999	जीवन गुणवता सुधार कार्यक्रम	79
10	18–22दिसंबर,1999	स्वयं सहायता समूहों के अध्यक्षों एवम सचिवों की कार्यशाला	उपमंडल स्तर
11	20–22दिसंबर,1999	सहायक खंड समन्वयकों की तृतीय वर्ष हेतु	71
12	27दिसंबर,99 से 24जनवरी,2002	पंचायत समन्वयकों की तृतीय वर्ष हेतु	382

13	16–17मार्च,2002	आय प्रदायक कार्यक्रम हेतु सूचना,प्रशिक्षण व सीखने हेतु	83
14	18 अप्रैल से 8 मई,2002	पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधि हेतु	366
15	22–24अप्रैल,2002	खंड/क्षेत्रीय समन्वयकों का प्रशिक्षण हेतु	92
16	17–19जून,2002	स्वयं सहायता समहों के स्रोत व्यक्ति प्रशिक्षण	44
17	20–21जून,2002	छूटे हुये पंचायत समन्वयकों का प्रशिक्षण	51
18	12जुलाई,2002	महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु	32
19	29–30 जुलाई,2002	नोडल केन्द्रों के अध्यक्षों/ उपाध्यक्षों के प्रशिक्षण हेतु	65
20	12अगस्त,2002	आई.टी.एल.सर्वेक्षण हेतु	18
21	14–15सितंबर,2004	इक्को क्लब प्रशिक्षण	165इक्को क्लब
22	27–28सितंबर,2004	उपमंडल स्तर पर इको क्लब के संयोजक सह संयोजक हेतु	98
23	21 अक्तूबर,2005	जिला स्तरीय स्रोत व्यक्ति	70
24	27–28सितंबर,2004	स्वयं सहायता समूहों के संचालन व बेंक लिकेंज बारे	चौंतड़ा
25	12–13अक्तूबर,2004	स्वयं सहायता समूहों के संचालन व बेंक लिकेंज बारे	धर्मपुर
26	21 अक्तूबर,2004	जिला स्तरीय इक्को क्लब स्रोत व्यक्तियों की कार्यशाला	70
27	4–5 नवम्बर,2004	खंड स्तरीय इक्को क्लब प्रशिक्षण कार्यशाला	104इक्को क्लब
28	9–10 नवम्बर,2004	जिला स्तरीय मार्केटिंग कौशल एवम् संभावनाओं बारे	मंडी
29	18–19नवम्बर,2004	जिला स्तरीय मार्केटिंग कौशल एवम् संभावनाओं बारे	सुंदरनगर
30	19–20नवम्बर,2004	आचार–चटनी बनाने बारे	धर्मपुर
31	23 नवम्बर,2004	कूड़ा करकट प्रंबंधन कार्यशाला	30इक्को क्लब प्रभारी
32	27–30नवम्बर,2004	आचार–चटनी बनाने बारे	करसोग
33	14–15दिसंबर,2004	आचार–चटनी बनाने बारे	गोहर

.....

क्र0	दिनांक	विषय	प्रतिभागी
1	20–21 मार्च,2003	जन चेतना केन्द्रों की गतिविधियां	53
2	10–11 मई,2005	इक्को क्लब प्रभारियों हेतु कार्यशाला	65
3	13–17 मई,2003	लिंग भेद पर कार्यशाला	44
4	30–31मई,2005	इक्को क्लब प्रभारियो हेतु उपमंडल स्तर पर	173
5	14–15जून,2005	इक्को क्लब संयोजक तथा सह संयोजकों हेतु	150
6	10 जुलाई,2003	क्लाकारों का पुनः प्रशिक्षण	51
7	14–15 जुलाई,2003	स्वयं सहायता समूह	62
8	1–2अगस्त,2005	संपूर्ण स्वच्छता अभियान हेतु जिला स्तरीय सर्वेक्षण	77
9	4–6 अगस्त,2005	खंड स्तरीय सर्वेक्षण कार्यशाला	34
10	10–15अगस्त,2005	पंचायत स्तरीय सर्वेक्षण कार्यशाला	1121
11	23 सितंबर,2005	कूड़ा–करकट प्रबंधन कार्यशाला	32
12	11–18नवम्बर,2005	कला जत्था प्रशिक्षण कार्यशाला	15
13	12–13 दिसंबर,2005	चयनित 70 पंचायतों में 10 खंडों के समन्वयकों हेतु	85
14	15 दिसंबर,2005	खंड स्तरीय कला जत्थे हेतु प्रशिक्षण	148
15	10 जनवरी,2006	चयनित पंचायतों के प्रधानों हेतु	49
16	20–28जनवरी,2006	उपमंडल स्तरीय पूर्ण स्वच्छता अभियान खंड स्तरीय	2500
17	15–17 फरवरी,2006	पंचायत स्रोत व्यक्ति हेतु	800
18	18 फरवरी,2006	जिला पार्षदों हेतु कार्यशाला	36

राज्य स्तर पर कार्यशालाएं

क्र0	दिनांक	विषय	स्थान	प्रतिभागी
1	5–6 मार्च,1998	प्राथमिक शिक्षा	चम्बा	2
2	18मार्च,1998	सतत शिक्षा	शिमला	2
3	29–30मई,1998	जन संख्या विकास शिक्षा	शिमला	2
4	2 जुलाई,1998	समतुल्यता कार्यक्रम	शिमला	2
5	27–28 सितंबर,1998	महिला सशक्तिकरण	शिमला	2
6	9–11 दिसंबर,1998	जन संख्या शिक्षा एवम् विकास कार्यशाला	शिमला	7
7	9नवम्बर,1998	कुष्ठ रोग निवारण	मंडी	1
8	9नवम्बर,1998	आई.ई.सी. परियोजना	शिमला	1
9	12 नवम्बर,1998	जनसंख्या शिक्षा एवम् विकास सामग्री निर्माण	मंडी	6
10	14–16नवम्बर,1998	जनसख्या विकास मुख्य स्रौत व्यक्ति कार्यशाला	शिमला	2
11	16 नवम्बर,1998	जन सेवा आश्रम सोलन	सोलन	1
12	24अप्रैल,1999	राज्य स्तरीय सतत शिक्षा कार्यक्रम	चम्बा	
13	26अप्रैल,1999	राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा स्वयं सहायता समूह कार्यशाला	शिमला	
14	6मई,1999	हि.ज्ञा.विज्ञान समिति सम्मेलन	चम्बा	
15	15 जुलाई,1999	राज्य स्तरीय सतत शिक्षा कार्यक्रम	शिमला	
16	27 जुलाई,1999	राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा महिला सशक्तिकरण पर कार्यशाला	सिरमौर	
17	27 सितंबर,1999	महिलाओं से संबंधित प्रजनन समस्याओं पर	शिमला	
18	18नवम्बर,1999	अन्य संस्थाओं से स्वयं सहायता समूहों पर चर्चा	कुल्लू	
19	18दिसंबर,1999	सूचना,शिक्षा एवम् संप्रेषण पर	शिमला	
20	13–15 फरवरी,2002	स्वयं सहायता समूह पर राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा गाईड बुक निर्माण	शिमला	1
21	27फरवरी,2002	स्वयं सहायता समूह पर राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा गाईड बुक निर्माण	शिमला	1
22	2मार्च,2002	प्रेरकों को प्रशिक्षण	शिमला	1
23	9मार्च,2002	सतत शिक्षा कार्यक्रम	शिमला	1
24	24मार्च,2002	कपार्ट द्वारा आयोजित	पालमपुर	1
25	28मार्च,2002	सतत शिक्षा मानीटरिंग	शिमला	1
26	3 अप्रैल,2002	सूचना,शिक्षा एवम् संप्रेषण	शिमला	1
27	13 जून,2006	दशाब्दि समारोह	कांगड़ा	7
28	11 जुलाई,2002	विश्व जनसंख्या दिवस पर	शिमला	1
29	8नवम्बर,2002	राज्य स्तरीय मानीटरिंग हेतु	शिमला	1
30	9नवम्बर,2002	स्वयं सिद्धा योजना बारे	शिमला	

राष्ट्रीय स्तर पर कार्यशालाएं

क्र0	दिनांक	विषय	स्थान	प्रतिभागी
1	16मार्च,1998	समतुल्यता कार्यक्रम पर	दिल्ली	1
2	20 अगस्त,1998	उत्तर क्षेत्रीय कार्यशाला	आगरा	1
3	21–30अगस्त,1998	विज्ञान लोकव्यापीकरण	मुंबई	1
4	7नवम्बर,1998	अखिल भारतीय जन विज्ञान कांग्रेस	नालदा	18
5	7नवम्बर,1998	सतत शिक्षा अध्ययन हेतु दल	वर्धमान,	8
6	8 अप्रैल,1999	सतत शिक्षा पर	दिल्ली	1
7	12जून,1999	साक्षरता एवम संप्रेषण	मंसूरी	5
8	24 सितंबर,1999	राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में लेखा आपतिबारे	दिल्ली	1
9	23अक्तूबर,1999	सतत शिक्षा कार्यक्रम	भुवनेश्वर	1
10	26अक्तूबर,1999	साक्षरता के प्रभाव	दिल्ली	1
11	11नवम्बर,1999	सतत शिक्षा पर कार्यक्रम	अलीगढ़	1
12	4 दिसंबर,1999	सतत शिक्षा में पंचायती राज संस्थाओं की भागीदारी	मंसूरी	6
13	6दिसंबर,1999	पंचायती राज संस्थाओं का साक्षरता से तालमेल	मंसूरी	6
14	8 दिसंबर,1999	रिचिंग टू अनरिचड	दिल्ली	1
15	18 दिसंबर,1999	बजट बारे	दिल्ली	1
16	5 अप्रैल,2002	जन स्वास्थ्य शिक्षा	हैदराबाद	2
17	22 जून,2002	महिला स्वास्थ्य शिक्षा	ऋषिकेष	
18	15–19अगस्त,2002	एन.एल.आर.सी. शोध ग्रंथ	दिल्ली	
19	20–23 अगस्त,2002	महिला शिक्षा पर शोध	दिल्ली	
20	2–4 सितंबर,2004	साक्षरता समागम	दिल्ली	93

बाहर से आये प्रतिनिधियों का विवरण

- 1जुलाई,1998 को राज्य संसाधन केन्द्र शिमला द्वारा साक्षरता के प्रभाव पर अनुसंधान।
- 26 सितंबर,1998 राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के संयुक्त निदेशक श्री बी.के. अस्थाना का मंडी दौरा।

- ❖ 30 नवम्बर,1998 लंदन विश्व विद्यालय से प्रीति चोपड़ा का अनुसंधान हेतु मंडी भ्रमण।
- ❖ 1दिसंबर,1998 राष्ट्रीय साक्षरता अनुसंधान केंद्र मंसूरी से दो व्यक्तियों का दौरा।
- ❖ 16 से 17 दिसंबर,1999 में ऐ.एम.राजशेखर, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा मंडी जिले का भ्रमण किया व यहां चल रहे सतत शिक्षा कार्यक्रम का जायजा लिया।
- ❖ गुवाहटी असम में 2 से 6 फरवरी,2006 में अखिल भारतीय जन विज्ञान सम्मेलन में सतत शिक्षा कार्यक्रम पर भाग लेने के लिए 2 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।
- ❖ मार्च,2006 में नैनीताल (उतरांचल) में संपूर्ण स्वच्छता अभियान हेतु साक्षरता समिति के 21प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- ❖ 30 जून,1999 को माता अध्यापक संघ की कार्यप्रणाली, पालमपुर, कांगड़ा का अध्ययन भ्रमण में 3 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।
- ❖ 2जुलाई,1999 स्वयं सहायता समूहों का अध्ययन करने हेतु धर्मशाला में 9 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पुरस्कार

- ❖ 5सितंम्बर,1998 को राज्य सरकार द्वारा मंडी साक्षरता समिति को पुरस्कृत किया गया।
- ❖ 22अक्तूबर,1998 को माण्डव कला मंच द्वारा मंडी साक्षरता समिति को पुरस्कृत किया गया।

पुस्तक विमोचन

- ❖ 8सितंबर,2002 को उपायुक्त मंडी द्वारा सतत शिक्षा कार्यक्रम के बाह्य मूल्यांकन की रिपोर्ट का विमोचन हुआ।

उत्सव तथा मेले

- माह जनवरी से मार्च 2000 में जीवन गुणवता सुधार कार्यक्रम के तहत समता उत्सव मनाए गए जिसमें जनवरी माह में मां का स्वास्थ्य, फरवरी माह में बच्चों का स्वास्थ्य तथा मार्च माह में योग रोग एवम् एडस विषय पर उत्सव आधारित रहे। जिला की 382 पंचायतों में से 325 पंचायतों में 10351 महिलाओं तथा 943 पुरूषों ने भाग लिया। 204 स्रोत व्यक्तियों जिसमें 100 स्वास्थ्य विभाग से 30 आई.सी.डी.एस. विभाग से स्रोत व्यक्तियों ने भाग लिया। लगभग 25000 लीफलैट इस दौरान बांटे गये।

- वर्ष 2004–05 आय प्रदायक कार्यक्रम में विभिन्न मेलों एवम् प्रदर्शनियों में स्वयं सहायता समूह द्वारा बनाया गया सामान बिक्री हेतु रखा गया। जिसका विवरण निम्नप्रकार से हैः–

क्र.	**मेलों एवम् प्रदर्शनियों का आयोजन**	**दिनांक**	**बिक्री**
1	समूह बाजार	दैनिक	225000.00
2	ग्राम श्री मेला कुल्लू	28अप्रैल से 5 मई,2005	28000.00
3	राज्य सम्मेलन शिमला	8से 12 सितंबर,2005	14000.00
4	ग्राम श्री मेला शिमला	22से 30 अक्तूबर,2005	15000.00
5	कुल्लू दशहरा	12से 19 अक्तूबर,2005	18000.00
6	सारस मेला मुंबई	21दिसंबर से 3जनवरी,06	24000.00
7	शिवरात्रि मेला	27फरवरी से 10 मार्च,06	79000.00
		कुल	**403000.00**

जन चेतना केन्द्रों को भेजी गई मुद्रित सामग्री अन्य सामग्री वर्ष 1998 से 2004

क्र	विवरण	क्र	विवरण	क्र	विवरण
’	गुलदस्ता जन चेतना(मासिक)	’	पिटारा ’ सबला	1	एक सपने का सफर
2	सतत शिक्षा कार्यक्रम मार्गदर्शिका	3	अचार बनाईए और कमाईए	4	चटनियां बनाईए और कमाईए
5	मुरब्बें बनाईए और कमाईए	6	पापड़ बनाईए और कमाईए	7	वोट का सही उपयोग
8	किसान क्या करें	9	लाटरी (प्रेमचंद)	10	घरेलू दस्तकारी
11	पाक कला	12	भेड़ बकरी पालन	13	डेयरी उद्योग
14	पशुपालन	15	हिमाचल के जन विद्रोह–1	16	हिमाचल के जन विद्रोह–2
17	हिमाचल के जन विद्रोह–3	18	गांधी ऐसे थे	19	ईदगाह
20	कहकहे	21	दल्लू दास के हाथ क्यों कटे	22	खरीददार के कानून हक
23	पुलिस और हम	24	कामगार औरतों के हक	25	चतुर चंपा
26	इंदिरा का हाथी	27	हमारे गांव की आशा	28	अंगोरा खरगोश पालन
29	भोजन और स्वास्थ्य	30	बिमारियों से कैसे बचें	31	अमृत फल हरड
32	पांच सूत्री कुंजी	33	अक्ल की मार	34	सांप आदमी के मित्र है
35	पशुओं से मनुष्य में फैलने वाले रोग	36	समन्वित ग्रामीण विकास	37	गाईड प्रशिक्षण – भूमिका
38	हिमाचल में चारा उत्पादन	39	मटर,भिंडी, फराशबीन	40	पंचायतों में जनता की भागीदारी
41	प्रजनन शिशु स्वास्थ्य–मार्गदर्शिका	42	मंडयाली लोकगीत	43	असलियत
44	बढ़िया हरा चारा कैसे उगाएं	45	पकाएं खाएं–1	46	मजेदार किस्से–1
47	मजेदार किस्से–2	48	म्जेदार किस्से–3	49	किस्से कहानियां–1
50	बच्चे का जन्म	51	गाय और भैंस पालन	52	दुधारू पशुओं के रोग
53	सूखां	54	क्या आप मां बनने वाली है	55	नन्हें मुन्ने की देखभाल
56	माहवारी	57	अगर जल्दी बच्चा न चाहे तो	58	पतियों से कुछ जाने
59	ऐसे रोग जिन्हें हम छुपाते है	60	मुर्गी पालन	61	क्यारी,किचन, गार्डन
62	घरेलू नुस्खे	63	सुनो पशु की पुकार	64	जमीन और कानून
65	जन प्रतिनिधियों से संवाद	66	हिमाचल दर्शन	67	महिला पुरूष कितने समान....
68	हमारे दांत	69	पान मसाला व गुटका जानलेवा है	70	आओं मिलकर गायें
71	दुनियां सबकी	72	स्वयं सहायता समूह मार्गदर्शिका		

सामग्री

क्र	*विवरण*	*क्र*	*विवरण*	*क्र*	*विवरण*
1	*स्टील अल्मारी 35X 21X15 इंच*	*2*	*जूटमैट(दरी) 8X10 फुट*	*3*	*जन चेतना केन्द्र कार्यवाही रजिस्टर*
4	*पुस्तकालय एवम स्टाक रजिस्टर*	*5*	*बालपैन (सिलो)*	*6*	*मंडी जिला का नक्शा*
7	*ब्लैक बोर्ड (रोलिंग)*	*8*	*बागवानी कैंची*	*9*	*मेज,,कुर्सियां,साईन बोर्ड,दरी*

2004–2005

- **150 इक्को क्लबों हेतु पर्यावरण मार्गदर्शिका**

2005–2006

- बांकीधार
- आय प्रदायक कार्यक्रम हेतु समूह चर्चा प्रपत्र
- 4 पुस्तकें

सतत शिक्षा कार्यक्रम हेतु प्राथमिक क्षेत्रों, कार्य विभिन्न विषयों का चयन

- वर्ष 1998 में कृषि, बागवानी, स्वास्थ्य, वन तथा पशुपालन को जन चेतना केन्द्र में प्रति माह चर्चा हेतु विषय का चयन किया गया।
- वर्ष 1999 में स्वास्थ्य मुख्य मुद्दा– मां का दूध, स्वस्थ मां, स्वस्थ बच्चा, बढ़ती जनसख्या–समस्या व समाधान, दस्तों से कैसे बचे, सांस की तकलीफ, यौग रोग एवम उपचार।
- वर्ष 2003–04 में पेयजल एवम् स्वच्छता कार्यक्रम के तहत जल स्रोतों की मुरम्मत व रखरखाव । स्वयं सहायता समूहों का गठन।
- वर्ष 2004–05 में स्वयं सहायता समूहों का गठन व बैंक लिकेंज, पर्यावरण जागरूकता, कृषि में विविधकरण परियोजना।
- वर्ष 2005–06 में संपूर्ण स्वच्छता अभियान, समूहों का गठन,लिकेंज,कृषि विविधिकरण परियोजना।
- मूल्यांकन रिपोर्ट

- ❖ 6 से 11 जून,2001 में प्रथम बाह्य मूल्यांकन राष्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा अधिकृत इंस्टीटयूट फार डिवेल्पमेंट एंड कम्युनिकेशन द्वारा किया गयां बाहर से आये अधिकारियों के साथ स्थानीय 40 सदस्यों की 19 टीमों ने 5 नोडल केन्द्रों ,12 सतत शिक्षा केन्द्रों व सतत शिक्षा केन्द्र का मूल्यांकन हेतु सहयोग दिया। अधिकारियों ने अपनी रिपोर्ट में कम संसाधनों व विपरीत परिस्थितियों में सतत शिक्षा कार्यक्रम को आगे बढ़ाया कह कर प्रंशसा की।

मूल्यांकन रिपोर्ट

मानव संसाधन विकास मंत्रालय , भारत सरकार के प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रायोजित विकास एवम् संप्रेषण संस्था , चंडीगढ़ द्वारा जिला मंडी में चल रहे सतत शिक्षा कार्यक्रम का प्रथम बाह्य मूल्यांकन अगस्त,2002 में किया गया जिसका विवरण निम्नलिखित हैः–

- ❖ अधिकारियों ने अपनी रिपोर्ट में वर्णित किया है कि जिला साक्षरता समिति ने जिले में 52 नोडल सतत शिक्षा केन्द्र, 429 सतत शिक्षा केन्द्र तथा 2692 मिनी सतत शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की है।
- ❖ जिला साक्षरता समिति केन्द्रों के संचालन हेतु कार्यकर्ताओं का चयन करने में भी सफल हुई है और उन कार्यकर्ताओं को सतत शिक्षा कार्यक्रम और पठन पाठन सामग्री से संबंधित प्रशिक्षण द्वारा पूरी जानकारी प्रदान की है।
- ❖ नोडल सतत शिक्षा केन्द्र तथा लघु सतत शिक्षा केन्द्र प्रायः गाइड व प्रेरकों तथा केंद्र समन्वयकों के घरों के किसी कमरे में चल रहे हैं। उन केन्द्रों में पीने के पानी तथा शौचालयों की सही व्यवस्था नहीं है।
- ❖ सतत शिक्षा केन्द्रों/ जन चेतना केन्द्रों में दरी, छोटी अल्मारी, मेज कुर्सी दी गई है। अल्मारी मुहैया करवाने का मुख्य उद्देश्य है कि साक्षरता समिति द्वारा दी गई पुस्तकों, अन्य पठन पाठन सामग्री, स्टॉक रजिस्टर और कृषि यंत्र इत्यादि को सुरक्षित रखना है। यह सामग्री लघु सतत शिक्षा केन्द्रों में तो सभी से है परन्तु सभी सतत शिक्षा केन्द्रों में नहीं हैं।
- ❖ लगभग 30–40 पुस्तकें जिसमें लीफलैट, पम्फलैट और कुछ पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक या समय समय पर निकलने वाली कुछ पत्रिकाएं भी उपलब्ध करवाइ गई है ये सब सीखने वालों की रूचि को ध्यान में रखकर उपलब्ध करवाई गई है।

- ❖ अधिकारियों का मानना है कि सतत शिक्षा कार्यक्रम के प्रारंभिक चरण में जिला साक्षरता समिति द्वारा सतत शिक्षा कार्यक्रम के द्वौरान उपलब्ध करवाइ गई सामग्री संतोषजनक है।
- ❖ रिपोर्ट में सतत शिक्षा केन्द्रों के गाईड/ प्रेरकों के चयन के सम्बन्ध में कहा गया कि स्थानीय समुदाय की सहमति से बनाए गए है तथा उन्हें सतत शिक्षा केन्द्रों के संचालन संबंधी प्रशिक्षण भी दिया गया है। साथ ही कुछेक प्रेरक/ गाईड अवैतनिक रूप से स्वयं सेवी भावना से केन्द्रों को चला रहे हैं। शेष गाइडों/ प्रेरकों को 50/–रूपए प्रतिमाह दिया जा रहा है।
- ❖ ये सभी केन्द्र क्योंकि प्रेरकों/ गाइडों के घरों के एक कमरे में स्थित है, इसलिए लोगों को पढ़ने के लिए अलग से पुस्तकालय या रीडिंग रूम नहीं है। किताबे अल्मारी में रखी हुई हैं। जब कभी कोई पढ़ने आता है तो निकाली जाती है। केवल महीने में दो बार केन्द्र खुलते हैं जब लोग पढ़ने आते हैं।
- ❖ स्टॉक रजिस्टर भी सतत शिक्षा केन्द्रों में दिए गए है तथा उनमें पूरा रिकार्ड कायम है।
- ❖ यह भी पाया गया कि नव साक्षर केन्द्रों से अपनी सुविधा के अनुसार पुस्तक अपने घरों में पढ़ने के लिए लेकर जाते हैं और पढ़ने के बाद वापिस कर जाते हैं।
- ❖ ज्यादातर पढ़ने वाली महिलाएं है और इन महिलाओं का आपस में दोस्ताना संबंध है।
- ❖ सतत शिक्षा केन्द्रों में आने वाले लोगों की जरूरतें व रूचि का भी पता लगाया जाता है। कि उन्हें किस प्रकार की पुस्तकें चाहिए। यह जानकारी जिला साक्षरता समिति तक भी पहुंचाते हैं ताकि उस तरह की सामग्री केन्द्रों को भेजी जा सके। परंतु जितना भी स्थान उपलब्ध है उसी में प्रेरकों ने पठन पाठन सामग्री चार्ट, नक्शा इत्यादि डिस्पले किए हुए है।
- ❖ अधिकारियों का मानना है कि जिला साक्षरता समिति तथा राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा उपलब्ध करवाई गई पठन–पाठन सामग्री से संतुष्ट है और लोगों की रूचि के अनुसार ही सामग्री उपलब्ध करवाई गई है।
- ❖ रिपोर्ट में यह वर्णित किया गया है कि वर्तमान समय में हालांकि सतत शिक्षा कार्यक्रम के तहत सूचना केन्द्र या सांस्कृतिक तथा खेल एवम् विकास केन्द्र नहीं है। फिर भी केन्द्र में इस प्रकार की गतिविधियां करवाई गई है जो निम्न प्रकार से हैः–
- ❖ विकास से संबंधित गतिविधियों पर भाषण तथा डिमोस्ट्रेशन सत्र करवाएं गए।

- ❖ अपनी मासिक बैठकों में सरकारी योजनाओं एवम् क्रार्यक्रमों की जानकारी दी जाती है।
- ❖ लोगों की जरूरतों के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित भाषण करवाएं जाते हैं।
- ❖ व्यक्तिगत प्रतिभा विकास कार्यक्रम के तहत खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक तथा धार्मिक गतिविधियों को केन्द्रों में आयोजित करवाया जाता है।
- ❖ कबड्डी, बालीबाल और कुश्ती जैसे खेलों का आयोजन जिसमें मेलों के दौरान करवाया जाता है।
- ❖ यूथ क्लब तथा महिला मंडलों से निरंतर संपर्क बनाया जाता है।
- ❖ केन्द्रों के लिए स्थानीय गीत, नृत्य, नाटक तथा कुठपुतली शो आयोजित किए गए।
- ❖ केन्द्रों में राष्ट्रीय दिवस त्यौहार तथा मेलों के आयोजन किये जाते हैं।
- ❖ कई बार स्वास्थ्य जांच, योगा तथा एड्स जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन केन्द्रों में होता है।
- ❖ महिलाओं के स्वयं सहायता समूह बनाए जा रहे है जो आपस में प्रति माह बचत कर लेनदेन करती है। अभी तक साक्षरता समिति ने जिले में 2000 स्वयं सहायता समूहों का गठन कर लिया है।
- ❖ आय प्रदायक कार्यक्रम भी किये जा रहे है जिसमें कृषि, हथकरघा इत्यादि कार्यो में प्रशिक्षित किया जाता है। कई कन्द्रों में लोग स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आचार, चटाई, पतल इत्यादि बना रहे हैं।
- ❖ कुछ केन्द्रों में जीवन गुणवता कार्यक्रम के तहत परिवार कल्याण, स्वास्थ्य, पीने के पानी, स्वच्छता, जनसंख्या, शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, समाज सेवा तथा सांप्रदायिक सदभावना से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करवाया गया है।
- ❖ साक्षरता तथा उतर साक्षरता अभियान में छूट गए निरक्षरों का साक्षरता कार्यकर्ताओं के माध्यम से सर्वेक्षण करवाया गया तथा सूची तैयार की गई ताकि सतत शिक्षा कार्यक्रम में उन्हें साक्षरता किया जा सके।
- ❖ समिति ने सतत शिक्षा केन्द्रों में कार्यरत प्रेरकों व गाइडों , महिला मंडल, युवा मंडल, महिलाओं के समूह, स्वयंसेवियों के समूह, सांस्कृतिक समूह गठित किए है ताकि निम्नलिखित गतिविधियों को सुचारू रूप से करवाया जा सके।

विकास से संबंधित गतिविधियों जैसे जनसंख्या, फसल, शैक्षणिक संस्थान, रोजगार, स्वास्थ्य इत्यादि के चार्ट बनाने हेतु।

- ❖ विभिन्न विभागों एवम् एंजेसियों से तालमेल कर पठन पाठन सामग्री के माध्यम से वातावरण निर्माण हेतु सतत शिक्षा के माध्यम से अभी तक कृषि, बागवानी

पशुपालन इत्यादि में 2248 लोगों को प्रशिक्षित किया गया है। तथा 53 लोग सिलाई कढ़ाई के क्षेत्र में तथा 50 सेंवियों व पापड़ इत्यादि बनाने में प्रशिक्षित किये गए। कुल मिलाकर सतत शिक्षा केन्द्र तथा लघु सतत शिक्षा केन्द्रों में उपर्युक्त कार्य संतोषजनक पाया गया। परंतु कमी रही तो यह कि केन्द्र महीने में दो बार खुलता है। अतः मंडी साक्षरता समिति को सुझाव दिया गया कि सतत शिक्षा कार्यक्रम की पूर्ण सफलता हेतु केन्द्रों को महीनें में दो से अधिक बार खोलने की जरूरत है।

- ❖ अधिकारियों ने मॉनीटरिंग कार्य की भी समीक्षा की तथा पाया कि नोडल प्रेरक की देखरेख में सतत शिक्षा केन्द्रों में मंडी साक्षरता समिति द्वारा उपलब्ध करवाई गई पुस्तकों तथा अन्य सामग्री का वितरण होता है । वे ही पुस्तकालय तथा लेखे जोखों को भी देखते हैं। नोडल प्रेरक सतत शिक्षा केन्द्रों की प्रगति रिपोर्ट को मंडी साक्षरता समिति तक पहुंचाते है। साथ ही यह भी सुनिश्चित करते है कि केन्द्र के आसपास लोग केन्द्र में आए व वहां रखी सामग्री से लाभ हासिल करें। केन्द्रीय प्रेरक, जिला साक्षरता समिति व बी.डी.ओ. निरंतर आपस में बैठकों के माध्यम से संपर्क रखते हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि नोडल प्रेरक अपनी जिम्मेवारी को बखूबी निभा रहे है। से भी सतत शिक्षा केन्द्र तथा प्रेरकों के काम से खुश है।
- ❖ सतत शिक्षा केन्द्रों को उपलब्ध करवाई गई पठन'पाठन सामग्री की भी सराहना की गई क्योंकि यह सामग्री लोगों की जरूरतों व रूचि के अनुसार है।
- ❖ सतत शिक्षा केन्द्रों की स्थापना के साथ साथ अन्य बुिदंओं पर भी जिला साक्षरता समिति द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों की प्रशंसा की गई जैसे समतुल्यता कार्यक्रम, आय प्रदायक कार्यक्रम, जीवन गुणवता सुधार कार्यक्रम इत्यादि ।

अधिकारियों ने यह भी सुझाव राष्ट्रीय साक्षरता मिशन को दिया कि सतत शिक्षा केन्द्रों को सही ढंग से चलाने के लिए एक अलग से भवन की जरूरत है जिसमें पुस्तकालय, वाचनालय, स्टोरकक्ष तथा सूचना प्रदान करवाने हेतु तथा अन्य गतिविधियों हेतु कक्ष होना चाहिए लेकिन धन के अभाव में तथा पिछड़े क्षेत्रों में भी जन चेतना केन्द्र चलाने के कारण यह सब संभव नहीं है। इसके साथ ही सभी जन चेतना केन्द्रों को फर्नीचर, अधिक पुस्तकें इत्यादि उपलब्ध करवाने का भी सुझाव दिया। साथ ही जन चेतना केन्द्रों को निरंतर खोलने का सुझाव दिया।